Dr. Md. Mehboob Alam shah
Deptt of Pol. science

R.B.G.R. College Maharajganj
T.D.C-part-I, paper-II

Concept of Political thought

Q. राजनीतिक चिन्तन की अवधारणा की व्याख्या — 1

उत्तर :— प्राचीन भारत में राजनीतिक चिन्तन पर मुख्य रूप से सनातन धर्म यानी हिन्दु-धर्म का प्रभाव रहा है। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था को हिन्दु राज्य व्यवस्था कहा जाता है। प्राचीन युग में जनतंत्रिय और राजतंत्रिय शासन प्रणाली की चर्चा मिलती है उससे पहले भी हमारे शास्त्रों में इसकी जानकारी मिलती है। भारतीय राजनीतिक चिन्तन की अवधारणाओं का वर्णन निम्न रूपों में किया जा सकता है।

राजनीति का शान्ति से सरोकार :— प्राचीन चिन्तन के मुताबिक संसार का संचालन प्रकृति नियमों से होता है। जबकि शान्ति का विचार शान्ति से सम्पन्न होता है। प्राचीन समय में धर्म से दण्ड का स्पष्ट जुड़ाव है। दण्ड नीति ही राज्य नीति है। दण्ड नीति का मतलब राज्य विधि या राज्यविधि शास्त्र है और इसका आधार समाजिक व्यवहार है। राजनीति का अर्थ दण्ड का कार्यवाही है। इस कार्य की न्यायपूर्ण होना आवश्यक है। कौटिल्य के अनुसार राजनीति स्वयं साध्य न होकर साधन है। इसं साधन का उद्देश्य उत्तम जीवन की प्राप्ति है। कौटिल्य के अनुसार राजा द्वारा अपने कर्तव्य का समुचित सम्पादन ही राजनीति है। राजनीति में यह भी समाहित है कि कैसे राजा स्वर्ग की प्राप्ति करें। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में राजनीति और नीति शास्त्र को अलग-अलग नहीं किया गया है जैसा कि अरस्तू और मैकियावेली ने किया है प्राचीन भारतीय राजनीति में राजनीति को

को शान्ति से जोड़कर इसे क्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है।

प्राचीन भारतीय राजनीति चिन्तन में राजनीति को अर्थशास्त्र से जोड़ा जाता है। राजनीति का उद्देश्य आर्थिक में सुव्यवस्था लाना है। राजनीति व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाये रखना है।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन से यह स्पष्ट होता है कि राजनीति राजधर्म का पर्यायवाची है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के महत्वपूर्ण ग्रंथों महाभारत के 12वें अध्याय शांति पर्व में कहा गया है कि – "जिस प्रदेश में राजधर्म की अवहेलना होती है वहाँ विनाश सुनिश्चित है।" महाभारत में कहा गया है कि सतयुग में लोग सद्गुण से परिपूर्ण थे धर्म का बोल बाला था लेकिन इस युग के अन्त के बाद समाज में बुराइयाँ आई सर्वोथा एवं लालच में बढ़ गई हुई सभी लोग असुरक्षित हो गये इस अवस्था से निजात पाने के लिए ईश्वर ने राजधर्म की सृजन किया जिसका पालन करने के लिए विरासत नामक राजा को भी सृजित किया विरासत ने राजधर्म को लागू करने के लिए शक्ति का सहारा लिया।

राजतंत्र की दैविक उत्पत्ति का सिद्धान्त :– महाभारत के शांतिपर्व से राजा का दैविक शक्ति का संकेत मिलता है इसके अनुसार जब संसार में मत्स्य न्याय कायम था तब ईश्वर ने शांति हेतु राजा को बनाया। दूसरे शब्दों में मत्स्य न्याय से निजात पाने के लिए एवं खुशहाल बनाने के लिए राजा को भेजा गया और राजा के आगमन से उत्पत्ति हुई। स्पष्टतः शांतिपर्व से राजतंत्र की दैविय उत्पत्ति के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया।

शुक्रनीति से राजा के संबंध में दैविक शक्ति स्वीकार किया गया है। शुक्र नीति से स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ईश्वर ने राजा को प्रत्यक्ष रूप से स्वामी बनाया लेकिन इसे जनता के हित में कार्य करने के लिए जनता से कर प्राप्त करने का अधिकार दिया।

<u>राजा का कर्तव्य</u> :— प्राचीन भारतीय चिन्तन में राजा के कर्तव्यों की चर्चा मिलती है। मनुस्मृति कौटिल्य के अर्थशास्त्र महाभारत के शांतिपर्व में है। स्पष्टतः राजा के कर्तव्यों की चर्चा की है। मनुस्मृति में राजा को अपने प्रजा के संदर्भ में सर्वोच्च शक्ति माना गया है। परन्तु स्वयं राजा विस्तृत कर्तव्यों के दायरे में है राजा का महत्वपूर्ण कर्तव्य जनता के हित में कार्य करना होता है। राजा दण्ड दे सकता है लेकिन वह न्यायोचित होना चाहिए। मनुस्मृति में स्पष्ट किया गया है कि राजा मनमाने ढंग से अपने कर्तव्यों का सम्पादन नहीं कर सकता। उसे नैतिक नियमों के अन्दर रह कर कार्य करना होगा।

महाभारत के शांति पर्व में राजा का जनता के हित में कार्य करना परम कर्तव्य बताया गया है। शांति पर्व में राजा के 36 कर्तव्य बताये गये हैं। कौटिल्य के द्वारा रचित अर्थशास्त्र में राजा के विस्तृत कर्तव्यों की चर्चा है कौटिल्य कहता है कि राजा का परम कर्तव्य है कि वह जनता के हित में अपना तमाम कार्यों का सम्पादन करेगा। कौटिल्य कहते हैं कि प्रजा के सुख में ही राजा का हित है।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में राजा के कर्तव्यों में परिस्थिती के अनुसार देखने को मिलता है प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में सामान्य परिस्थिति में धर्म निष्ठा के साथ कार्य के अनुसार अनिवार्य बताया है परन्तु विशेष परिस्थिति में राजा के द्वारा धर्म के विपरित साधनों का प्रयोग किया जा सकता है।

<u>राजनीतिक संगठन और शासन का लाभ</u>:— प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसके अन्दर शासन कला संगठन और कूटनीति सिद्धान्तों का विकसीत होना है। राज्य का सप्तांग सिद्धान्त राजनीतिक संगठन का सर्वमान्य सिद्धान्त है। जिसे शांति पर्व मनुस्मृति और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में विशेष महत्व प्रदान किया गया है। शुक्राचार्य ने अपनी

महत्वपूर्ण रचना शुक्र नीति के अन्तर्गत राज्य की तुलना वृक्ष से करते हुये अभिवादन किया है। शुक्राचार्य के द्वारा राज्य रूप वृक्ष की 6 संख्या है और पुष्प तथा वृक्ष के तीन फलों धर्म, अर्थ और काम की चर्चा की गई है।

राजा और धन :— महाभारत मनुस्मृति और अर्थशास्त्र में यह जोड़ दिया गया है कि राजा को न्यायपूर्ण कर को आरोपित करना चाहिए अर्थशास्त्र में यह बताया गया है कि राजा को जनता से लिया गया कर अपने हित में एक भी पैसा खर्च नहीं करना चाहिए। जनता से लिया गया कर जनता के विकास शांति व्यवस्था कायम करने का निर्माण में खर्च करना ही धर्म है।

राजनीतिक दायित्व और जनता :— प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के अनुसार राजा के आज्ञा का पालन करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि उसका आदेश जनता के हित में एवं समाज के हित से होता है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में राजा को दायित्व की चर्चा है। राजा का कर्तव्य है कि वह हमेशा जन हित में कार्य करें।

बौद्ध धर्म का प्रचार :— प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में उस समय नया मोड़ आया और बौद्ध धर्म का आगमन इसमें वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था एवं ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विरोध किया और सर्वप्रथम ऐसे धर्म की बुनियाद रखी गई जिसका आधार धर्मशास्त्र नहीं था। बौद्ध धर्म के अनुसार राजा का कार्य धर्म की रक्षा करना बताया गया है। लेकिन इनके अनुसार धर्म की व्यापक अर्थ राजा द्वारा नैतिकता सामाजिकता और न्याय को ध्यान में रख कर विधि के निर्माण करना चाहिए। धर्म के अन्तर्गत राजा द्वारा कानून का संरक्षण है बौद्ध धर्म के उदय से ही प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में विधि निर्माण का शुरुआत हुआ बौद्ध धर्म में जन साधारण की इच्छा को महत्व दिया गया है। राज्य के उत्पत्ति समझौता सिद्धान्त का प्रतिपादन ~~किया गया~~ और इसका समर्थन किया गया।